मूल्य 1 रुपया

कृषक समाचार

भारत कृषक समाज का मासिक मुख पत्र

कृषक समाचार की 32,000 प्रतियां सन् 1960 से हर महीने छापकर सदस्यों को भेजी जाती हैं

वर्ष 68 मई, 2023 अंक 05 कुल पृष्ठ 6

रूरल वॉयस कॉन्क्लेवः कृषि मार्केटिंग में टेक्नोलॉजी के महत्व पर चर्चा, कोऑपरेटिव की भूमिका पर भी जोर

- रूरल वॉयस

इस कॉन्क्लेव में पैनल चर्चा का एक विषय था नए जमाने की एग्रीकल्चर मार्केटिंग - फ्यूचर एवं ऑप्शन तथा इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग। इस थीम पर एनएफसीएसएफ लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर प्रकाश नायकनवरे ने कहा, दुनिया में रोजाना नई टेक्नोलॉजी का विकास हो रहा है, कृषि क्षेत्र इसकी अनदेखी कैसे कर सकता है

नई दिल्ली में आयोजित एक एग्रीकल्चर कॉन्क्लेव में नए जमाने की एग्री मार्केटिंग पर गहन चर्चा हुई। इस चर्चा में विशेषज्ञों ने टेक्नोलॉजी के महत्व पर विशेष जोर दिया और कहा कि खेती को मुनाफे का काम बनाने के लिए इसमें रिसर्च की भूमिका महत्वपूर्ण है। कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समर्पित डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म रूरल वॉयस की दूसरी वर्षगांठ पर 23 दिसंबर, 2002 शुक्रवार को इस कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया था। इसमें विभिन्न क्षेत्रों के एक्सपर्टस और इंडस्ट्री के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भाग लिया।

इस कॉन्क्लेव में पैनल चर्चा का एक विषय था नए जमाने की एग्रीकल्चर मार्केटिंग - फ्यूचर एवं ऑप्शन तथा इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग। इस थीम पर एनएफसीएसएफ लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर प्रकाश नायकनवरे ने कहा, दुनिया में रोजाना नई टेक्नोलॉजी का विकास हो रहा है, कृषि क्षेत्र इसकी अनदेखी कैसे कर सकता है।

कोऑपरेटिव चीनी उद्योग के विशेषज्ञ के तौर पर उन्होंने कहा कि अब वे दिन गए जब लोग किराना दुकान से खुली चीनी खरीदते थे। अब चीनी आकर्षक पैकेट में रिफाइंड और सल्फरविहीन तथा

क्यूब के रूप में उपलब्ध है। नायकनवरे ने कहा कि भारतीय चीनी अब दूसरे देशों में भी उपलब्ध है। उन्होंने विभिन्न सक्सेस स्टोरी में कोऑपरेटिव की भूमिका पर भी लोगों का ध्यान दिलाया। उन्होंने कहा कि जमीनी स्तर पर जानकारी और जागरूकता फैलाने में कोऑपरेटिव महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

इसी विषय पर चर्चा में हिस्सा लेते हुए इफको के चीफ मैनेजर (मार्केटिंग) रजनीश पांडे ने कहा कि निकट भविष्य में इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग रोज के कामकाज का हिस्सा बन जाएगा। उन्होंने बताया कि इफको के साथ 36,000 किसान कोऑपरेटिव जुड़े हैं। हमारा प्रयास कृषि को मुनाफे का धंधा बनाने का है ताकि किसानों के बच्चे आजीविका के लिए खेती छोड़कर दूसरे व्यवसाय की ओर ना जाएं। देश की जीडीपी में कृषि क्षेत्र का योगदान भले ही 14 से 15 फ़ीसदी हो देश की 55 फ़ीसदी आबादी आजीविका के लिए इस पर निर्भर है। लेकिन नई पीढ़ी के युवा प्रोफेशन के तौर पर खेती को अपनाने से बच रहे हैं।

पांडे ने कहा कि यूरिया का बेतहाशा इस्तेमाल मिट्टी की उर्वरता को नष्ट कर रहा है और इस प्रक्रिया में पर्यावरण को भी नुकसान हो रहा है। मिट्टी पर यूरिया के प्रभाव को कम करने के लिए वाराणसी स्थित इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट के जरिये हमने शोध कराया जिसमें बताया गया कि अगर हम यूरिया की खपत को आधा कर दें तो पर्यावरण को नुकसान करने वाले गैसों के एमिशन को कम किया जा सकता है। हमने वाटर सॉल्यूबल उर्वरक तैयार किये। समुद्री शैवाल के तत्वों का उपयोग कर सागरिका उर्वरक बनाया जो किसानों के लिए फायदेमंद साबित हुआ।

उन्होंने कहा कि दुनिया में सबसे नवीनतम टेक्नोलॉजी नैनो टेक्नोलॉजी है, इसका अंतरिक्ष से लेकर हमारे रोजमर्रा के जीवन में उपयोग हो रहा है। इफको ने पांच साल पर इस पर शोध किया और इस तकनीक का उपयोग कर नैनो यूरिया बनाया जो एक लंबे परीक्षण के बाद तैयार उत्पाद है। इसका परीक्षण 11 हजार किसानों के खेतों में अलग-अलग 94 फसलों में किया गया। इसके बाद 20 एसएयू में 43 फसलों पर इसका परीक्षण किया गया। नौ फीसदी उत्पादन बढ़ा। मिट्टी की सेहत बेहतर हुई। नैनो यूरिया की उपयोग क्षमता 80 फीसदी से अधिक है। हम नैनो उर्वरक के सात उत्पादन संयंत्र लगा रहे हैं। इनमें 34 करोड़ बोतले बनेंगी। नैनो यूरिया आयात पर देश की निर्भरता कम करेगा जिससे बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत होगी।

आर्य.एजी के सह संस्थापक और सीईओ प्रसन्ना राव ने कहा कि उनका स्टार्टअप फसलों की कटाई-तुड़ाई के बाद की प्रक्रिया में संलग्न है। स्टार्टअप यह सुनिश्चित करता है कि किसानों को उनकी उपज का

अधिकतम लाभ मिले। उन्होंने कहा, हमारी कोशिश रहती है कि किसानों का नुकसान कम से कम हो। हम एफपीओ के साथ मिलकर काम करते हैं, उन्हें यह बताते हैं कि उत्पाद को कब और कहां बेचना है जिससे उन्हें सर्वश्रेष्ठ कीमत मिले। लेकिन हम उन पर जबरदस्ती नहीं करते, बेचने या ना बेचने का फैसला उनका अपना होता है।

एमसीएक्स इंडिया लिमिटेड के एवीपी, पीएमटी-एग्री बदरुद्दीन खान ने कॉटन हेजिंग पर एक विस्तृत प्रजेंटेशन के जरिये कॉन्क्लेव में आये प्रतिभागियों को बताया कि किस तरह किसान यह निर्णय ले सकते हैं कि उनकी फसल बेचने का सबसे अच्छा समय कौन सा है और फसल की सबसे अच्छी कीमत कैसे उन्हें मिले। उन्होंने कहा, फ्यूचर प्रेजेंट ट्रेडिंग इसका जवाब है। इसमें विक्रेता एक निश्चित दर पर एडवांस कॉन्ट्रैक्ट करता है। अर्थात भविष्य की किसी तारीख के लिए आज ट्रेडिंग होती है। उन्होंने किसी भी अप्रिय स्थिति से बचने के लिए बीमा के तौर पर हेजिंग की बात भी कही।

सभी वक्ताओं ने कॉन्क्लेव आयोजित करने और कृषि तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर विचार रखने का मौका देने के लिए रूरल वॉयस के एडिटर इन चीफ हरवीर सिंह की सराहना की। उन्होंने कहा कि एक डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म के रूप में रूरल वॉयस कृषिशास्त्रियों और सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी बन चुका है।

इस सत्र के मॉडरेटर और ज्वाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी (जेएनयू) के प्रोफेसर डॉ. बिस्वजीत धर ने कहा कि कृषि क्षेत्र की दिक्कतों का हल निकालने के लिए तमाम कोशिशें हो रही हैं लेकिन यह अंधेरे में तीर चलाने जैसा काम हो रहा है। पिछले 75 साल में देश में तमाम तरह की नीतियां बनती रही हैं लेकिन कृषि क्षेत्र जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र के लिए अभी भी कोई नीति नहीं है।

डॉ. धर ने कहा कि अमेरिका में केवल एक फीसदी आबादी कृषि पर निर्भर है लेकिन उसके बावजूद अमेरिका हर पांच साल में कृषि नीति में बदलाव करता है। यह नीति कम से कम 500 पेज का एक विस्तृत दस्तावेज होता है। इसी तरह यूरोपीय यूनियन भी अपने 27 सदस्य देशों के लिए एक कॉमन एग्रीकल्चर पॉलिसी बनाता है। जब नीतिश कुमार केंद्र में कृषि मंत्री बने उस समय एक ड्राफ्ट कृषि नीति बनाई गई थी। लेकिन यह ड्राफ्ट कभी एक नीति का रूप नहीं ले सका। जब तक एक कृषि नीति नहीं बनती है तब कृषि क्षेत्र एक कमरे में अंधे लोगों के बीच एक हाथी की तरह ही बनी रहेगी।

O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O

2022 पांचवां सबसे गर्म साल रहा, भारत में फसलों को हुआ नुकसान: डब्ल्यूएमओ

- रूरल वॉयस

जलवायु परिवर्तन की वजह से पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। वर्ष 2022 में दुनिया का औसत तापमान 1.15 डिग्री सेल्सियस अधिक था। इसकी वजह से पिछला साल आधिकारिक तौर पर अब तक का पांचवा या छठा सबसे गर्म साल रहा है। इससे भारत में फसलों की पैदावार में गिरावट आई है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) की ओर से शुक्रवार को जारी ताजा रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है।

स्टेट ऑफ दि ग्लोबल क्लाइमेट 2022 नाम से डब्ल्यूएमओ की रिपोर्ट में कहा गया है कि 2022 में वैश्विक औसत तापमान पूर्व-औद्योगिक (1850-1900) औसत से 1.15 डिग्री सेल्सियस अधिक था। ला नीना की स्थिति के बावजूद रिकॉर्ड में यह "पांचवां या छठा" सबसे गर्म वर्ष रहा है। वर्ष 2015 से आठ साल बाद यह अब तक का सबसे गर्म वर्ष था। रिपोर्ट में इसके तीन मुख्य कारण बताए गए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, ग्रीनहाउस गैसों - कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड की सांद्रता 2021 में रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई (ताजा आंकड़े इसी वर्ष तक के उपलब्ध हैं)।

डब्ल्यूएमओ का कहना है कि जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों से बचने के लिए वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री की सीमा (पूर्व-औद्योगिक स्तरों की तुलना में) से नीचे रखना महत्वपूर्ण है। 2022 में मानसून से पहले का समय भारत और पाकिस्तान में असाधारण रूप से गर्म था। पाकिस्तान में मार्च और अप्रैल सबसे गर्म रहा जो एक रिकॉर्ड था। इन दोनों महीनों में राष्ट्रीय औसत तापमान दीर्घकालिक औसत से चार डिग्री सेल्सियस से अधिक था। वहीं भारत में अत्यधिक गर्मी की वजह से अनाज की पैदावार कम हो गई। उत्तराखंड के कई जंगलों में ज्यादा गर्मी की वजह से आग लग गई थी।

रिपोर्ट के मुताबिक, "भारत और पाकिस्तान में 2022 में मानसून सीजन से पहले चली गर्म हवाएं फसलों की पैदावार में गिरावट का कारण बनी। इसकी वजह से भारत को गेहूं का निर्यात रोकना पड़ा। इससे पहले रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद भारत ने चावल निर्यात पर पाबंदी लगाई थी। भारत के इन दोनों कदमों से अंतरराष्ट्रीय बाजार में मुख्य खाद्य पदार्थों की उपलब्धता खतरे में पड़ गई। अंतरराष्ट्रीय खाद्य बाजारों में मुख्य खाद्य पदार्थों की पहुंच व स्थिरता और पहले से ही मुख्य खाद्य पदार्थों की कमी से प्रभावित देशों के लिए भारत के इस कदम ने ज्यादा जोखिम पैदा कर दिया है।"

डब्ल्यूएमओ ने कहा है कि पिछले साल जून में मानसून सीजन के दौरान, खासकर भारत के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों में बाढ़ की विभीषिका देखने को मिली। बाढ़ और भूस्खलन के कारण लगभग

700 लोग मारे गए और अन्य 900 लोग बिजली गिरने से मारे गए। असम में बाढ़ से 6.63 लाख लोगों का विस्थापन भी हुआ। इसी तरह, पाकिस्तान में भारी बारिश की वजह से बाढ़ का गंभीर संकट पैदा हुआ और भूस्खलन हुआ। इससे देश के दक्षिणी एवं मध्य भागों के सबसे कमजोर और खाद्य-असुरक्षित क्षेत्रों में सबसे अधिक प्रभाव पड़ा और जल जनित बीमारियों का प्रसार हुआ। बाढ़ की वजह से 9.36 लाख पशुओं के साथ 1,700 से अधिक लोग मारे गए। कृषि भूमि के बड़े क्षेत्र प्रभावित हुए और परिवहन व बुनियादी ढांचे के निर्माण को काफी हद तक बाढ़ ने बाधित कर दिया।

डब्ल्यूएमओ के महासचिव प्रोफेसर पेटेरी टालस ने कहा, "दुनिया भर में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में वृद्धि की वजह से जलवायु परिवर्तन जारी है। जलवायु परिवर्तन की घटनाओं से दुनिया की बड़ी आबदी गंभीर रूप से प्रभावित हो रही है। उदाहरण के लिए, 2022 में पूर्वी अफ्रीका में लगातार सूखा पड़ा, पाकिस्तान में रिकॉर्ड तोड़ बारिश हुई और चीन एवं यूरोप में भीषण गर्मी ने लाखों लोगों को प्रभावित किया। इसने खाद्य असुरक्षा को बढ़ावा दिया जिससे बड़े पैमाने पर पलायन बढ़ा और अरबों डॉलर का नुकसान हुआ। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों के बीच सहयोग की वजह से जलवायु की घटनाओं से प्रेरित मानवीय प्रभावों को कम करने में बहुत प्रभावी साबित हुआ है, खासकर मृत्यु दर और आर्थिक नुकसान को कम करने में। संयुक्त राष्ट्र की 'सभी पहल के लिए प्रारंभिक चेतावनी' का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि पृथ्वी पर मौजूद हर व्यक्ति को पहले ही चेतावनी मिल जाए।"

फिलहाल, दुनिया के लगभग 100 देशों में पर्याप्त मौसम सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं। इस महत्वाकांक्षी कार्य को पूरा करने के लिए अवलोकन नेटवर्क में सुधार और पूर्व चेतावनी, जल विज्ञान एवं जलवायु सेवा क्षमताओं में निवेश की आवश्यकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि लंबे समय से निगरानी किए जा रहे ग्लेशियरों के एक सेट में औसतन 1.18 मीटर पानी के बराबर बर्फ का नुकसान हुआ जो पिछले दशक के औसत से बहुत अधिक है। आधिकारिक तौर पर वर्ष 2015 के बाद यह छह सबसे नकारात्मक द्रव्यमान संतुलन वर्ष (1950 से 2022 तक) के बाद हुआ है। 1970 के बाद से संचयी द्रव्यमान संतुलन (उस समय से ग्लेशियरों से खोई हुई बर्फ की कुल मात्रा) 26 मीटर से अधिक पानी के बराबर है। द्रव्यमान संतुलन समय के साथ ग्लेशियरों के द्रव्यमान में परिवर्तन को मापने का एक तरीका है। इसकी गणना बर्फ की कुल मात्रा और पिघलने वाली बर्फ की मात्रा को घटाकर की जाती है।

ग्रीनहाउस गैसों द्वारा जलवायु प्रणाली में फंसी ऊर्जा का लगभग 90 फीसदी महासागरों में चला जाता है। समुद्र की गर्मी की मात्रा, जो ऊर्जा में इस लाभ को मापती है, 2022 में रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गई। डब्ल्यूएमओ ने कहा है कि लगातार तीन वर्षों से ला नीना की स्थिति के बावजूद समुद्र की सतह के 58 फीसदी हिस्से में 2022 में कम से कम एक बार समुद्री गर्म हवाओं का असर रहा। इसके विपरीत केवल 25 फीसदी समुद्र सतह पर ठंडी हवाओं का असर देखा गया।

(भारत कृषक समाज उपर्युक्त लेखों से संबंध नहीं रखता है, यह लेखकों की निजी राय है)

RNI No. 831/1957 **प्रकाशन की तिथि : 1 मई, 2023**
पोस्टल रजि० DL (S)-01/3092/2021-23 **एल.पी.सी., दिल्ली आर.एम.एस, दिल्ली–6,**
पहले भुगतान किये बिना पोस्ट करने का लाइसेंस नं. U(C)-92/2021-23 **तारीख 4 एवं 5, मई 2023**

सार्वजनिक सूचना

भारत कृषक समाज के सदस्यों से अनुरोध है कि वे भारत कृषक समाज के महासचिव के कार्यालय के साथ अपने संपर्क विवरण को अद्यतन करें।

संपर्क विवरण निम्नलिखित प्रारूप में प्रस्तुत किए जाने की आवश्यकता है:

नामः ______________________________

सदस्यता संख्याः ______________________________

वर्तमान पताः ______________________________

____

टेलीफोन नंबरः ______________________________

मोबाइल नंबरः ______________________________

ईमेलः ______________________________

(कृपया पते का सबूत की एक छायाप्रति संलग्न करें)

विधिवत भरा हुआ फॉर्म निम्नलिखित पते पर स्पीड पोस्ट या ईमेल द्वारा इस माह के अन्त तक या उससे पहले जमा कराएं:

महासचिव

भारत कृषक समाज

ए–1, निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली, 110013

ईमेलः– Samdarshi.bks@gmail.com

टेलीफोनः– 011–41402278

नोट: आपसे अनुरोध है कि आप अन्य सदस्यों को भी ऐसा करने के लिए सूचित करे।

भारत कृषक समाज ए–1, निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली– 110013, फोनः 011–41402278, 9667673186, ई–मेलः ho@bks.org.in, **वैबसाईटः** www.bks.org.in **के लिए श्री उरविन्द्र सिंह भाटिया द्वारा सम्पादित, मुद्रित व प्रकाशित तथा एवरेस्ट प्रेस, ई 49/8 ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस –2, नई दिल्ली –110020 द्वारा मुद्रित।**